गुवध
सबसे बड़ा
देशद्रोह

इन्द्रलाल शास्त्री विद्यालंकार

(मूल्य दो आने)

प्रकाशक—
जंबूकुमार चांदूवाड़, इन्द्र पेपर मार्ट
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर सिटी

विजया दशमी
सं० २०१३
चतुर्थ बार २०००

श्री परमात्मने नमः

बलि के लिए लाया हुआ पशु कहता है—

(१)

स्वर्ग सुखों की प्यास न मुझको स्वर्ग प्राप्ति की चाह नहीं,
इसके लिए कभी भी मैंने तुमसे कुछ भी कहा नहीं।
होम किये ही अगर यज्ञ में स्वर्ग प्राप्ति हो जाती है,
माता पुत्र पिता भ्राता की फिर क्यों बलि न सुहाती है ॥

(२)

मैं मावा मिष्टान्न न चाहूं नहीं दूध घी चाहूं मैं
इन सब को तुम खाओ पीओ कैसा भी तृण खाऊं मैं।
मेरा वंश और मैं भी तो तुम्हें पुष्ट नित करते हैं
दूध दही घृत अन्नादिक दे फिर भी रहते डरते हैं ॥

(३)

हम ही तुमको क्यों दीखे हैं मांही अग्नि पटकने को
किसी देवता के सन्मुख कर निर्मम काट डालने को।
पशु को बलि से स्वर्ग मिले तो निज कुटुंब की पहले दो
पहले उसको स्वर्ग भेज दो हमें यहीं पर रहने दो ॥

(४)

निज कुटुंब को पहले भेजो या झट स्वयं पधारो तुम
मैं तो तृण खाकर जी लूंगा मुझे छोड़दो जल्दी तुम।
नहीं जरूरत स्वर्ग पुरी की मुझको नहीं सुहाती है
होय मुबारिक तुम्हें मुझे तो यही जिन्दगी भाती है॥

(५)

दिखलानी है अगर वीरता व्याघ्र सिंह पर दिखलाओ
उन्हें लाइये देवी सन्मुख पकड़ वीरता अजमाओ।
ऐसा तुम क्यों नहिं करते हो निजबलि होने का है डर
इसी लिए निर्बल को तुमने लाकर बांधा है इस घर॥

(६)

अपनी संतति की हत्या से नहीं देवता खुश होते
जैसी तुम हो संतति भाई! वैसे हम भी हैं होते।
हम हैं निर्बल तुम बलधारी यही मात्र तो अन्तर है
सब समान नहिं होते थोड़ा सब में होता अन्तर है॥

(७)

बोल सको तुम, राज्य तुम्हारा तुम्हीं शास्त्र निर्माता हो
इसीलिए तुम मानव मुझ पर अत्याचार विधाता हो।
स्वार्थ तुम्हारा नाम देवका तुमने लेकर के जग में
जाल बिछाए स्वर्ग सुखों के शूल बिछाये हैं मग में॥

(८)

स्वार्थ पूर्ति के हेतु तुम्हीं ने शास्त्रों में उल्लेख किये
वे हत्यारे काले अक्षर शास्त्र नाम से प्रथित हुये।
आज उन्हीं से मौत हमारी तुम निःशंक रचाते हो
ले धार्मिक स्वातंत्रय नाम तुम थोथा ढोंग मचाते हो ॥

(९)

हिंसा में नहिं धर्म कहीं भी वेद पुराण शास्त्र देखो
ग्रन्थ कुरान वायविल सारे शास्त्र पारसी अवलेखो।
एक अहिंसा परम धर्म है स्पष्ट शास्त्र सब कहते हैं
कुछ स्वार्थी विद्वज्जन उनमें हिंसाविष रख देते हैं॥

(१०)

यों पशु का यदि मांस खाय तो यह मानवता हंस दगी
देव प्रसाद बहाने खाना दुष्प्रवृत्ति छिप जावेगी।
सभी देवता पान अमृत का करते हैं यह बात प्रसिद्ध
सुरा मांस नहीं पीते खाते क्या वे हैं सम पक्षी गृद्ध ॥

(११)

अगर हमारी हत्या में ही धर्म तुम्हें दरसाता है
तो फिर तुम लोगों की हत्या में क्यों यह धर्म अटकता है।
क्या कोई कुछ पास तुम्हारे इस सवाल का उत्तर है
सबल अबल पर क्यों इठलाता देकर त्रास निरंतर है ॥

(१२)

यद्यपि शास्त्र पढ़े हम नाहीं नहि कानून जानते हैं
तोभी पर पीड़ा कसूर हैं इतना खूब समझते हैं।
सींग हिलाते जब हम तुम उर हमें मारने दौड़ो तुम
जब तुम हमको लगो मारने फिर क्योंनहि अपराधी तुम ॥

(१३)

तुमने जो कानून बनाया नरपीड़ा अपराध बना।
पशु की हत्या तक के मांही कहो क्यों न अपराध बना
मन माना कानून बनाया तुम कानून विधाता थे
प्रतिनिधि था कोई न हमारा तुम ही कर्त्ता धर्त्ता थे ॥

(१४)

सुई चुभावै अगर तुम्हारे कितनी पीड़ा होती है
सुई चुभाने वाले नर की क्या क्रीड़ा कहलाती है।
तुम क्रीड़ा या धर्म बहाने मुझ पर शस्त्र चलाते हो
मानवता की लज्जा को भी हो निर्लज्ज भुलाते हो ॥

(१५)

निर्बल मार वीर कहलाये क्या यह वीरोचित है कार्य
क्या ऐसे ही वीर कहाते जो करते हैं काम अनार्य।
जो निर्बल की रक्षा करता वही वीर कहलाता है
उनपर अत्याचारों को जो कभी नहीं सह पाता है ॥

(१५)

उस कानून और शास्त्रों को बार बार अविरल धिक्कार
प्राणिजनों में जहां विषमता इतनी हो अरु नहीं विचार ।
कब आवेगी सन्मति तुम को कब होगा सब जीवों से प्यार
इन देवों से यही प्रार्थना दो हत्यारों को ललकार ।।

(१७)

बलका अनुचित लाभ उठाकर मुझे मारते हो, मारो
नहीं पाप का डर तुमको पर एक बात मन अवधारो ।
जिसका मांस आज तुम खाते वही तुम्हारा खावेगा
पापों का फल आज नहीं तो कल जरूर ही पावेगा ।।

बढ़िया चमड़ा कैसे बनता है ?

पशुओं का वध रोकिये पशुवध देश द्रोह।
बहुत लाभ हित, छोड़िये, स्वल्प लाभ का मोह॥

(१)

बढ़िया चमड़े के बनने की सुनिये मित्रो करुण कथा,
जिसके सुनने से ही होती घृणा ग्लानि अरु पूर्ण व्यथा,
हो जाते हैं खड़े रोंगटे दिल दहलाने लग जाता।
जिस पशु में यह घटना बीतै उसका तो वह ही ज्ञाता॥

(२)

इस थोड़े से जीवन के हित मानव करता दानवता।
वह नृशंस निर्दय बन कर के कर लेता क्या नहीं पता॥
बैल गाय भैंसे भैंसों को पानी के नीचे नल के।
लेजाकर सिर पांव बांधता दृढ़ता से जो हिल न सके॥

(३)

खूब छिड़कता जाता पानी खूब मारता बैंतों से।
भूख प्यास से व्याकुल पशु को खूब मारता लातों से॥
बेचारा पशु घबरा जाता कौन सुनै हा! करुण पुकार।
मांस चर्म का लोभी मानव दानवता का बना शिकार॥

(४)

वह असहाय मूक पशु दुखिया अशरण प्राणी घबरा कर,
प्राणों की तज आश भीत हो देता मूत करै गोबर।
भूख प्यास की व्यथा इधर है उधर पड़े बैंतों की मार,
अतुल व्यथा से प्राण गमावै इस मानव को है धिक्कार ॥

(५)

गीला चमड़ा बैंत मार से उसका देह सूज जाता
चमड़े में जब दौर खून का लहर मारने लग जाता।
बैंतों की उस कठिन मार से खून चमकने लग जाता
तभी निर्दयी दुष्ट कसाई ले कटार कर में आता

(६)

उसे काटता चीर फाड़ता खाल खींच लेता सारी
मांस बेचता खुद भी खाता उसका बनता व्यापारी।
खाल बेचता लेते उसको जूते चप्पल निर्माता
तोभी उसका जूता चप्पल साधारण सा कहलाता ॥

(७)

बढ़िया जूता चप्पल कैसे बनते उसकी सुनो कथा
सुन करके भी यदि नहि छोड़ो तो कहना भी है सभी वृथा।
आज अहिंसा के लगते हैं नारे सारे ही जग में
गाते गीत सभी स्थानों पर हिंसा है पर पग पग में ॥

(८)

पशु को पहले खूब चराकर कर लेते काफी तैयार
फिर उसका मुंह पांव बांधकर खड़ा करें ला वध्यागार ।
खूब उबलता गरम गरम जल उस पशु पर देते हैं डाल
जिससे उस पशु के सारे ही जल जाते हैं तन के बाल ॥

(९)

गरम गरम पानी से उसके तन को भी धोया जाता
जिससे बाल एक नहिं रहता खून खाल में रमजाता ।
पशु बेचारा लगै कांपने तन जलने है लग जाता
मानों ज्यों भूकंप हो रहा वह थर्राने लग जाता ॥

(१०)

आंख खोल के फिर वह देखें किसी सहायक आशा में
फिर वह तो एकांत वास है पड़ा दुष्ट की पाशा में ।
वहां एक था वही कसाई जो भक्षक खुद बन बैठा
क्रंदन कौन सुने करुणामय वह तो था हिंसक ऐंठा ॥

(११)

काट खड्ग से माथा उसका खाल खैंच ली जाती है
उस पशु की उस भव की लीला सब समाप्त की जाती है ।
मूक दीन पशु बोल सकै नहि, दीनों का संसार नहीं
उसके यदि बोली होती तो क्या मजाल जो बात कही ॥

(१२)

कहते चमड़े के व्यापारी अरु उनके जो सेवक दूत
इस चमड़े के जूते चप्पल होते हैं बढ़िया मजबूत।
लचकदार चमकीले सुन्दर नरम मुलायम फैसनदार
होय कीमती कंपनियों के करें देश का बंटा ढार ॥

(१३)

फैंसी अरु शौकीन जनों को ये ही अच्छे लगते हैं,
गांवों से भी इनके खातिर लोग शहर को भगते हैं।
बड़े आदमी पैसे वाले बाबू युवक रु जैंटिल मैन
इसी खाल के जूते चप्पल पहनें ज्यों सम अंधे नैन ॥

(१४)

सुनो काफ़ लैदर क्या होता हृदय द्रावक बड़ी कथा
काफ कहें बच्चे को लैदर चमड़ा उसका करुण तथा।
बछड़ा बछड़ी पाड़ा पाड़ी को पानी से धो धा कर
लचकदार ले बैंत हाथ में मार लगाते कस कस कर ॥

(१५)

ताजा खून उबल उठता है खाल मुलायम हो जाती
दौर खून का तेजी करता खाल सुर्ख सब हो जाती।
फिर मशीन के नीचे लाकर खड़ा कर दिया जाता है
अपनी मां का लाल दुलारा थर्राने लग जाता है ॥

(१६)

वह चाहता है कहीं भागना पर असफल हो जाता है
किं कर्त्तव्य विमूढ विवश हो मां मां मां चिल्लाता है ।
सुने कौन तूती अवाज को उस नक्कार कु-खाने में
उस मशीन कांटे वाली का कांटा चुभता सीने में ॥

(१७)

जब मशीन उसके शरीर में पूरी फिट हो जाती है
फिर मशीन का पहिया फिरता खाल उतर सब जाती है ।
उस पशु शिशु का मांस पींजरा खड़ा तड़फता रहता है
तीन चार घंटों तक जीवित घोर कष्ट को सहता है ॥

(१८)

काट काट कर टुकड़े करता उस शरीर का वह दानव
बेचैखावें मांस वत्स का, चमड़े की चीजें अभिनव ।
इस चमड़े की चीजें नाजुक बने मुलायम शौकीनी
बड़ी कीमती छोटी मोटी बढिया चमकीली भीनी ॥

(१९)

बड़े बड़े शौकीन मिजाजी इस चमड़े के हैं प्यारे
जूते चप्पल आदिक लेवें हत्या के भागी सारे ।
यही काफ लैदर कहलाता इसकी चीजें जो धारें
वे सब पशु हत्या के भागी हैं नरक धरा में निज डारें ॥

(२०)

इससे भी कुछ अधिक सुनो जो होते पशु पर अत्याचार
जिनके केवल श्रवण मात्र से खड़े रोंगटे होय अपार।
बकरी भेड़ भैंस गायों के उदर मध्य जो होता गर्भ
उसका पात कराते दानव उन्हें मारते होय सगर्व॥

(२१)

मां को मार पुत्र को मारा उसकी खाल उत्तारें ये
पाप कमावें देश नशावें अल्प स्वार्थ को धारें ये।
देशद्रोह नहि पशुवध के सम पशु धन ही सम्पति का मूल
देश दरिद्री हुआ पाप से बिछे जा रहे पथ पथ शूल॥

(२२)

अनुमतिदाता, घातक. तनको अलग अलग करने वाला
लेने और बेचने वाला और रांधने भी वाला।
लाने वाला, खाने वाला सभी पाप के भागी हैं
इन आठों को पाप बराबर कहते ऋषि बड़भागी हैं॥

(२३)

जो कहलाते यहां अहिंसक पर प्रत्यक्ष न हिंसक हैं
हैं परोक्ष हिंसा के भागी, कैसे कहें अहिंसक हैं।
क्यों वे ऐसा करे कसाई यदि उनका उपयोग न हो
इस चमड़े के जो व्यवहारी हिंसक भाई! वे जन हो॥

(२४)

देश धर्म के यदि तुम सेवक हो तो इस चमड़े को छोड़ो
चमड़े के बर्ताव मोह से अपना मन झटपट मोड़ो।
सब चमड़ा नहिं छोड़ सकोतो मृत पशु काही लो पग काम
यों मारे पशुका तो छोडो करो न घर को बूचर धाम ॥

(२५)

मानो राय हमारी मित्रो ! आर्य धर्म के धारी हो
आप आर्य हो नहिं अनार्य हो प्रणिमात्र उपकारी हो।
जीव दया भारत की संस्कृति जीवो सब को जीने दो
हैं सब देशोद्धार इसी में प्राणामृत को पीने दो ॥

(२६)

ऐसी हाट और कम्पनी से जूते चप्पल मत पहनो
स्वयं मौत से मरे पशु की चाम खाल का ही पहनो।
अजिस कोट दस्ताने स्वीटर बटुवे बढिया चमड़े के
कुछ सामान न लो तुम लो यदि आवश्यकता कपड़े के ॥

(२७)

पहले वृक्षों की छालों से चर्म रंगा सब जाता था
किन्तु आज तो खून रुधिर से रंगने की है चली प्रथा।
स्वस्थ गाय बछड़े आदिक का खून निकाला जाता हैं।
इक मशीन की लगा नली को फिर वह पशु मर जाता है ॥

(२८)

उसी खून से चमड़े ऊपर रंग चढाया जाता है।
जिसका कर उपयोग मनुज यह पाप कमाता जाता है।
भारत में जब अंग्रेज न थे तब नहिं ऐसा होता था
बाहर जाता चर्म नहीं था, मृत का ही सब खपता था ॥

(२९)

अंग्रेजों ने शौक लगाया भारत के इस फैशन का
पशुधन कटवा कटवा करके खेल दिखाया निर्धन का।
ये चमड़े अमरीकादिक जा उनको मौज चखाते हैं
भारत से धन खींच खींच कर सबके प्राण दुखाते हैं ॥

(३०)

बदले में श्रंगार प्रसाधन की आती है सामग्री
भूल गया सब आपा भारत चाल विदेशी सब पकरी।
हुआ दरिद्री पर अबलंबी इस भारत का हाल बुरा
चाहते थे होगा स्वराज्य तो सौख्य मिलेगा हमें जरा ॥

(३१)

है स्वराज्य पर मिला सुराज्य न चौबेजी से बने दुबे
छब्बेजी बनने की आशा में कष्ट सिंधु मझ पड़े डुबे।
यंत्रों की है चली प्रणाली उससे सारी बरबादी
पूंजीवाद पनपता जाता बेकारी को आजादी ॥

(३२)

घर घर में इस बेकारी ने जमा लिया अपना डेरा
सुबह मिली तो सांझ नहीं है, सांझ मिली वो ही घेरा।
बाढ़ बढ़ रही पढ़े लिखों की चौमासे के कीड़े ज्यों
ठोकर खाते फिरते शिक्षित प्राण धारते हैं ज्यों त्यों॥

(३३)

हत्या का अभिशाप बुरा है वही लग रहा भारत को
पापों का फल मिले बराबर देश जा रहा गारत को।
शासकजन की दृष्टि लगी है मात्र विदेशी पन की ओर
किसे कहें कोई नहिं सुनता आग लगी है सब ही ठौर॥

(३४)

भारत से अंग्रेज गये अरु उनकी फौजें चली गई
उनका शासन नहीं रहा अब उनकी सत्ता विदा हुई।
मांस चर्म की रे! आवश्यकता भारत में अब भी है क्या
इन चीजों के बिना यहां पर काम नहीं चल सकता क्या॥

(३५)

मांस प्राकृतिक भोजन नाहीं, है अनेक रोगों का हेतु
कृषि प्रधान भारत की नैया नहिं लगने देता यह सेतु।
मृत पशु की ही खाल देश को है पर्याप्त जरूरत को
अघ संचय अरु देश द्रोह में क्यों डालो फिर भारत को॥

(३६)

पशु धन के जीवित रहने से भारत भू का है कल्याण
दूध दही की नदी बहेगी अन्न राशि से रक्षित प्राण ।
स्वावलंब भारत भू होगी संस्कृति की होगी रक्षा
भारत नहिं मांगे किससे भी अन्न वस्त्र की फिर भिक्षा ॥

(३७)

ज्यों अघसंचय होता जाता बुद्धि बिगड़ती जाती है
मति बिगड़े से दशा देश की नीचे गिरती जाती है ।
नैतिक स्तर भी तभी बढ़ेगा जब होवेंगे पाप समाप्त
जीवघातसम पाप न दूजा कहते आये यह सब आप्त ॥

(३८)

हे भगवन् ! दो सन्मति जल्दी भारत के सब लोगों को
हत्या का यह पाप मिटावें भोगें स्थायी भोगों को ।
भारत भू जननी, धर्म पिता है, धर्म अहिंसा में रहता
हिंसा मांहीं धर्म नहीं है वेद कुरान शास्त्र कहता ॥

सब लोगों से प्रार्थना, तजिये मांस रु चर्म ।
नैतिक स्तर ऊंचा करें, करके नित सत्कर्म ॥

पशु कसाई आदि से कहता है—

(१)

तुम भी प्राणी मैं भी प्राणी फिर दोनों में क्या है भेद ?
खाते पीते तुम भी मैं भी सभी बात में प्रकट अभेद।
बोल सको तुम मैं भी अशक्त हूं इतना ही तो है अन्तर
इस ही से तुम छुरी चलाते नहीं पापसे कुछ है डर ॥

(२)

तुम बलधारी मैं कुछ निर्बल तुम करते हो अत्याचार
निर्बल को क्या मार डालना कहलाता है श्रेष्ठाचार ?
अरे कसाई ! मेरे भाई ! कुछ तो मानवता को धार,
मानवपन की तेरी मति को बार करोड़ों है धिक्कार ॥

(३)

बुद्धि गंवाई लाज गंवाई दानवता का बना शिकार
तू अपने जीवन साथी की हिंसा करता छोड़ विचार।
मांस हेतु तू बूचरखाने मुझे पकड़ कर ले जाता
वहां पकड़कर छुरी फेरता नहिं सुनता मैं चिल्लाता ॥

(४)

मेरी खाल उतार बेचता मांस बेचता तू खाता
रुधिर पान करता रु कराता नहीं जरा सा शरमाता।
क्या दूजा व्यवसाय नहीं है रोटी का दाता जग में
बिछा रहा कांटे तू तीखे तेरे अरु मेरे मग में ॥

(५)

शाक फलादिक बहुत पड़े हैं मानव के जो है आहार
मुझको भक्ष्य बनाकर तूने किया स्वपर का अति अपकार।
मेरे तन पर गरम २ जल डाल मुझे पहुँचाता त्रास
पीछे लेकर बैंत हाथ में पीटे सूडै धर उल्लास ॥

(६)

बोल सकूं नहि मैं जवान से मेरे दुख की कडी कथा
तुझ निर्दय ने निर्भय होकर पहुंचाई है खूब व्यथा।
तेरी बैंतों से शरीर का सारा खून उबल आता
फिर तैंने ले कटार कर मेरे टुकड़े दो पाता ॥

(७)

मेरी तूने खाल खींचली मूंगफली का छिलका ज्यों
नहीं दया तेरे उर आई फिर तू मानव है क्यों।
मांस काट काट कर तैंने बेचा खाया हंस हंस के तूने
यही कमाया चर्म कहावे जिससे धन पाया तूने ॥

(८)

हाड़ चाम चर्बी अरु आंतें सबका तू व्यापारी है
पर प्राणों का तू विक्रेता अद्भुत अत्याचारी है।
आर्तनाद मेरा सुनने को सबके कान बने बहरे
शासकजन भी नहिं सुनते हैं क्षणिक स्वार्थ में सन गहरे ॥

(९)

मेरी आज सुने नहिं कोई क्या मैंने अपराध किया
देश भक्ति के बाने में भी क्यों उसका गल घोट दिया।
मेरा जीवन तुमको सबको सकल सुखों का दाता है
मेरे दूध दही घृत से ही यह तन पुष्ट लखाता है ॥

(१०)

हम हैं मां पितु सब लोगों के तुम्ही मारते फिर हमको
तुमको लाज क्यों नहीं आती कैसे समझावें तुमको।
तुम धन के हो लोभी केवल किन्तु कमाना नहिं जानो
मेरा जीवन बना रहा तो माला माल बनो, मानो ॥

(११)

अल्प लोभ के खातिर तुमतो सब सर्वस्व गंवाते हो
तुमसा मूरख नांही जग में पशुधन अतुल नशाते हो।
गोधन पशुधन ही जग में धन धनी उसी से कहलाते
इससे ही धन सदा बरसता, बढ़ता फलता नित पाते ॥

(१२)

तुम तो इतने हुये निर्दयी लोभी अरु अत्याचारी
मम शिशु को भी खींच गर्भ से मार डालते अविचारी।
मुझे मिटा मम वंश मिटाया तुममें यह है गद्दारी
इस सम देश द्रोह नहिं दूजा बुद्धि खोगई है सारी॥

(१३)

किससे कहें मर्म की बातें भांग कूवे के मांहि पड़ी
सभी हो रहे पागल जग में बुद्धि सभी की हाय ! सड़ी।
जो मेरी कुछ बातें बोलें उनकी कुछ भी नाहिं चलती
उनके हाथ नहीं सत्ता है उलटी है घुड़की मिलती॥

(१४)

धनिको ! जैंटिलमैनो ! तुमही सबसे ज्यादा दुश्मन हो
मेरी हत्या लिए तुम्हारे, रहते तुम ही बन ठन हो।
तुम इंजक्शन लेते ऐसे जिनमें मेरी हत्या मूल
सब प्रयोग मुझ पर अजमाते मेरे ही चुभते है शूल॥

(१५)

डाक्टर जन भी औषधि के हित मुझ पर करते सभी प्रयोग
उनकी मौज, मौत है मेरी कैसा बना विलक्षण योग।
इस मानव ने केवल अपने लिए समझ कर सब संसार
योग्य अयोग्य नहीं कुछ सोचा स्वार्थ हेतु मेरा संहार॥

(१६)

मैं निर्बल हूं बोल सकूं नहिं इसका लाभ उठाते हो
नहीं सभ्यता यह, नहिं संस्कृति क्यों यह जाल बिछाते हो।
जो हिंसा से होय दूर वह हिन्दू नर कहलाता है
हिंसा में जब हिन्दू भी रत तो दिल यह दहलाता है ॥

(१७)

मेरी मौत तुम्हारी मौजें गुलछर्रे उड़ते दिन रात
मेरा जीवन ले लेकर भी करते बढ़बढ़ कर नित बात।
मेरा चाम तुम्हारे जूते चप्पल बैग घड़ी तसमा
होलडोल सर हैटादिक सब मुझे मारकर धर चश्मा ॥

(१८)

मुझे मार मम सुतको को मारो मौज मजे फिर रचते हैं
आर्यपने का रच आडम्बर म्लेच्छ कार्य नित मचते हैं।
मेरा मांस खाय बन मोटे चर्बी बनै सदा आहार
रक्त आंत हड्डी मज्जादिक तुम नहिं छोड़ो किसी प्रकार ॥

(१६)

कर विदेशियों की तुम संगति चर्म मांस के तुम शौकीन
धर्म लुटाया देश लुटाया मुझे मिटाकर खुद भी क्षीण।
फैशन शौक तुम्हारे खातिर मेरे जाते हैं प्रिय प्राण
मौज तुम्हारी मौत हमारी कहिये कौन करै अब त्राण ॥

(२०)

एक समय था जब भारत में कहीं दूध नहिं बिकता था
नदी दूध की बहती नित थी पय सुत समझा जाता था।
दूध बेचना पूत बेचना तुल्य भावना थी मन की
बिकती आज छाछ भी देखो हुई न्यूनता पशुधन की ॥

(२१)

नहीं दूध के दर्शन तक भी बहुतों को इस धरणी पर
देश दरिद्र रुग्ण हो गया फल मिलता है करणी पर।
जैसी करणी वैसी भरणी अब तो समझो धनवानो
पूर्व पुण्य का फल यह धन है पुण्य गये पर पछतानो ॥

(२२)

पुण्य ठहरता धर्म कर्म से पुण्य कर्म से धन ठहरे
पुण्य बिदाई बित्त बिदाई मौज मजे फिर दूर परे।
धर्म नाश से देश नाश हो क्षण में दृश्य प्रलय सम है
जीव दयामय धर्म अहिंसा नहीं दूसरा तत्सम है ॥

(२३)

यदि तुम चाहो अपना जीवन तो मुझको भी जीने दो
तुम चाहो यदि खुद भी मरना तो मुझको भी मरने दो।
मैं कहती हूं तुमरे हित की धरिये हृदय भलाई है
नहिं धरिये तो दोनों की ही जाहिर खड़ी बुराई है ॥

(२४)

वृक्ष न काटो फल को खाओ सदा रहोगे तुम खाते
वृक्ष न काटो फल न मिलेंगे छाया तक से रह जाते।
मेरे दूध जन्म भर पीओ बन्धु सुतों से लो तुम काम
मरे बाद लो चाम काम में जीवनभर रहिये सुखधाम ॥

(२५)

तुमने केवल अपना ही हित सोचा है रे धनवानो।
मंगा मशीनें धनी बने तुम दूरदर्शिता को ठानो।
इक मशीन बेकार बनाती सौ लोगों को इक दम ही
मेरी भी जरूरत नहिं रखती तब हत्या हो निर्मम ही ॥

(२६)

याद रखो तब धन न रहेगा जब फैलेगी बेकारी
रूसी साम्यवाद फैलेगा जिसमें तुम पर है बारी;
पापों का फल तुम भोगोगे यह मेरा तुमको अभिशाप
करनी शुभ बननी नहिं तुम से फिर छूटेगा कैसे पाप ॥

(२७)

हिंसक जनकी सारी करणी अच्छी भी निष्फल जाती
जैसे पय की भरी कढ़ाई बूंद जहर से विष होती।
जीवघात सम पाप न दूजा सभी पुण्य इससे मरते
हत्या का अभिशाप बुरा है हत्या में क्यों मति धरते ॥

(२८)

मैं यदि जीवित रहा जगत में पेट सभी का पालूंगा
मालामाल करूं नहिं तो भी भूखा नहिं रहने दूंगा ।
जन पालन की अतुल शक्ति है मुझ में, जो प्रत्यक्ष नहीं
मैं परोक्ष सत्ता का धारक मेरे सम दूजा न कहीं ॥

(२६)

मुझको पालो खूब बढाओ और कमाओ नित रोटी
हलें चलाओ अन्न उगाओ बात नहीं है यह छोटी ।
जग में प्राणीं मौजकरें सब इस विधिसे यदि चाल चलें
सारा भारत सुखी होयगा आपद सारी शीघ्र टलें ॥

(३०)

बुद्धिहीन मैं बुद्धिधनी तुम पड़ी तुम्हारी मत में धूल
कल्पवृक्ष मैं चिंतामणि मैं किन्तु गये हो तुम सब भूल ।
कामधेनु मैं निःसंशय यदि तुम मुझको दुह जानो
समझो मुझको कौन वस्तु मैं कहना कुछ मेरा मानो ॥

(३१)

नगरपालिकाओं से कहदो करो कसाईखाने बन्द
मांसाशन का त्याग करो सब कुर्म चर्म का तजदो फंद ।
अंग्रेजों के आने पहले नहीं कसाईखाना था
इस भारत को दीन दरिद्री दुर्गत उन्हें बनाना था ॥

(३२)

सबका माथा बदल गये वे सबको किंकर बना गये
कृषिप्रधान भारत धरणी से पशुधन हितकर मिटा गये।
मांसाशन को प्रबल बनाया चमड़े का रंग लगा गये
बूचडखाने ! हजारों स्थान स्थान पर खुला गये ॥

(३३)

भारत से अंग्रेज गये पर वही प्रणाली कायम है
सर की टोपी का रंग बदला पर माथा तो तत्सम है ।
वेजीटेबिल घी अरु ट्रैक्टर भारत की जड़ काट रहे
खाद विदेशी आदिक चीजें बेकारी को बढ़ा रहे ॥

(३४)

यही नाश के कारण मेरे और तुम्हारे भी भाई
चाकचिक्य में पड़कर तुमने उल्टी मुंह की है खाई।
तुम समझो हम उन्नति करते पर बोते अवनतिका बीज
बुद्धि बची यदि थोड़ी भी सोचो क्या है अपनी चीज ॥

बेकारी क्यों बढ़ रही है?

(१)

मानव का जब काम कर रही आज मशीनें हैं सारी
तो मानव बेकार होगया फैल गई है बेकारी।
बेकारी का मूल हेतु है यह शिक्षा भौतिक विज्ञान
तात्कालिक तोलाभ दीखता फिरमिट जाता नाम निशान॥

(२)

दूध दही घृत अन्नादिक हित पशु धन की आवश्यकता
नर मादा पशु ही इन सब के हैं जग में निर्माता।
दूध चल गया जब डिब्बे का और दही भी उसका ही
वैजीटेबिल घी आया है पता नहीं कुछ रस का हो

(३)

मादा पशु के बिनही जब ये चीजें सब मिल जावेंगी
गाय भैंस बकरी आदिक ये कहां स्थान फिर पावेंगी।
आवश्यकता रहै न इनकी कौन इन्हें फिर पालेगा
खर्चा कौन व्यर्थ झेलेगा इनका रखना सालेगा

(४)

पशुधन यों सब मिट जावेगा पर अवलंबी सब होंगे
देश रसातल में जावेगा पीड़ित सारे जन होंगे
पशुधन जब होगा विनिष्ट तो यन्त्रों के होंगे आधीन
यंत्र मिला नहि या खराब होगया तो फिर होंगे सब ही हीन

(५)

अगर बचाना तुम्हें देश को बनो स्वावलंबी सारे
बेकारी है अगर मिटाना तजो विदेशीपन सारे।
दूध तजो डिब्बे का पीना वेजीटेबिल घी छोड़ो
ट्रेक्टर के उपयोग योग से झटपट अपना मुख मोड़ो ।।

(६)

पशुधन से ये चीजें मिलती उसकी करिये नित रक्षा
इसको निर्दय हो मत मारो यही देश हितकी शिक्षा।
खिला पिलाकर खूब बढाओ जीवन हित सब चीजें लो
कल्पवृक्ष सम चिंतामणि सम कामधेनु सम मत भूलो ।।

(७)

ट्रेक्टर आदिक ये सब चीजें पराधीन अरु प्रकृति विरुद्ध
फैलावेंगे रोग देश में बेकारी भी महानिषिद्ध।
देश नाश की यह सामग्री पनप रही है भारत में
अगर ध्यान नहिं दिया देश ने मिल जावेगा गारत में ।।

(८)

मानव को बेकार बनाया इन मशीन जंजालों ने
पशुधन को निःसार कर दिया यंत्र चलाने वालों ने।
ज्यों पशु की उपयोग हीनता कटने में कारण बनती
मानव की बढ़ती बेकारी गिनी नहीं जाती गिनती ।।

(९)

निर्बल मूक दीन पशु पर जो दया भाव के नहिं धारी
मानव पर भी दया कहां से उनके मनमें हो भारी।
विश्व शांति की सजग भावना का है करुणा से सम्बन्ध
करुणा जब होवे न हृदय में व्यर्थ शांति का सभी प्रबंध ॥

(१०)

शांति शांति के इन नारों से कभी शांति नहिं होवेगी
करुणा दया स्त्रोत से आत्मा जब तक आर्द्र न होवेगी।
आत्म—आर्द्रता में कारण है सब जीवों पर श्रेष्ठ दया
जीवो और जीने दो सबको यही मार्ग प्राचीन नया ॥

(११)

किसी जीवको भी मत मारो निज सम समझो सबमें प्राण
नहीं कर सको भला न यदि कुछ तो भी बुरा न करिये जान।
जग के सारे जीव सुखी हों रहें सभी ही रोग-विहीन
सबका हो उद्धार जगत में रहे न कोई दुख में लीन ॥

(१२)

ऐसी सुन्दर रखो भावना अरु ऐसा ही हो बर्ताव
किसी जीवका बुरा न चाहो करिये कभी नहीं दुर्भाव।
सबका चाहो भला तुम्हारा भला स्वयं हो जावेगा
करणी का फल मिलता दृढ यह पुण्य काम में आवेगा ॥

भारती युवकों से

(१-२)

दोहा—भारत के युवको ! सुनो एक मर्म की बात
तुमहीं भारत देश के जीवन आत्मा गात ।
गलत मार्ग यदि तुम चले देश जायगा डूब
भारत के सर्वस्व तुम यही समझ लो खूब ॥

(३-४)

तुम अच्छे भारत भला बिगड़े वह भी हेय
युवकाश्रित सब देश में हेय और आदेय ।
किन्तु जा रहे तुम किधर सोचा क्या उद्देश्य
अपना आपा भूल कर बनते पूर्ण विदेश्य ॥

(५-६)

भाषा भूषा भेष सब खान पान व्यवहार
छोड़ रहे निज देश का तुम आचार विचार ।
नकल विदेशों की करी समझ उसी में शान
नष्ट हो रहे देश के सारे जीवन प्राण ॥

(७-८)

संस्कृति अपनी ही भली सोचो समझो मित्र
चाकचिक्य में मत फंसो करो न मन अपवित्र ।
फैशन में पड़ना बुरा चलो देश की चाल
द्रव्य न हो जब वह करे मानव को बेहाल ॥

(६-१०)

हिंसक परिणति है बुरी हिंसा सम नहिं पाप
हिंसा सारे जगत को देती है अभिशाप।
सब जीवों को मित्र सम समझ करो व्यवहार
निर्बल पर करना दया मानवता का सार ॥

(११-१२)

मांस मद्य से देश का बहुत हुआ नुकसान
नैतिक स्तर नित गिर रहा उन्नति का अवसान।
चसका बढिया चर्म का लगा गये अंग्रेज
जिससे पशुधन कट रहा दीन देश जरखेज ॥

(१३-१४)

उन चीजों को छोड़िये जिनमें ही त्रसघात
भोजन औषधि घृत वसन भूपादिक की बात।
धूम्र पान करना बुरा सीनेमा भी रोग
गिरता जाता देश यह ज्यों इनका संयोग ॥

(१५-१६)

मांस चर्म सेवन बढा यद्यपि नहिं अंग्रेज
धर संस्कृति जाते रहे पुस्तक खाली पेज।
है स्वराज्य निज जाति का तोभी नहीं सुराज
चाल ढाल भाषादि सब सम पाश्चात्य समाज ॥

(१७-१८)

लगा गये अंग्रेज हैं फैशन का शठ भूत
आज इसी से देश यह पावन बना अपूत।
भोजन वस्त्रादिक सभी आश्रित हैं पर यंत्र
है स्वतंत्र नहिं देश निज पूरा है परतंत्र ॥

(१९-२०)

यंत्रों के इस जाल से होते नर बेकार
बेकारी सब दोष की निश्चय मूलाधार।
राजा राणा मिट गये एकतंत्रता नष्ट
शासन है जनतंत्र अब करो न इसको भ्रष्ट ॥

(२१-२२)

वही देश ऊंचा सदा जिसका उच्च चरित्र
जनता के चरित्र से रहता देश पवित्र
वह शिक्षा भी है बुरी जो करदे अविनीत
जो शिक्षा नहिं दे विनय उससे रहिये भीत ॥

(२३-२४)

मात पिता गुरु आदि का करिये नित सम्मान
उन्हें न पीड़ा दीजिए करके कुछ अपमान।
उनके चरण प्रसाद से जीवित शिक्षित आज
उनकी सेवा नित करो समझ उन्हें सरताज ॥

(२५-२६)

विद्या है तो दीजिये उसका सबको दान
शिक्षित होकर मूर्ख का मत करिये अपमान।
अगर शक्ति है देह में करो अबल का त्राण
उस पर अत्याचार को रोको रखिये प्राण ॥

(२७-२८)

निर्बल जीवों पर अगर होता अत्याचार
कर संघर्ष बचाइए उनका जीवन सार।
पशु पक्षी निर्बल सभी मूक दीन निर्दोष
इनकी रक्षा कीजिये व्यर्थ न करिये रोष ॥

(२८-३०)

तदनुसार ही दंड दो यदि हो कुछ अपराध
हत्या तब ही जब भली वैसा हो अपराध।
रंचमात्र अपराध का है हत्या नहिं दंड
हत्या तो तब भी बुरी हो अपराध प्रचंड ॥

(३१-३२)

दुष्ट तजै नहि दुष्टता तबही तो वह दुष्ट
साधु तजै यदि साधुता होय साधुता रुष्ट।
सब को संग ले चलिये मत चलिये कर ऐंठ
ऐंठी ऐंठी चाल से नहिं रहेगी पैठ ॥

(३३–३४)

धन यदि अपने पास में करिये पर उपकार
दीन दुखी को दीजिये भोजन वसन अगार।
दीन दुखी यदि बढ गये कर देंगे उत्पात
भखा क्या क्या नहिं करे कर डाले परघात॥

(३५–३६)

जीवन चर्या राखिये सादा और सुखकार
परका संकट देखकर करिये झट परिहार।
भारत देश दरिद्र है यहां न धन बाहुल्य
फैशन से नित बढ रहा दरिद्रता प्राबल्य॥

(३७–३८)

ऊपर से दीखें भले भीतर कुछ नहि तत्व
आडंबर आटोप से रहै न स्थायी सत्व।
देखा देखी दीन भी बनते फैशन युक्त
बढ़े दीनता चौगुनी कभी न हो उन्मुक्त॥

(३९–४०–४१)

धनिक जनों का काम है दीनों का उपकार
उनको संग ले चालिये नर जीवन में सार।
भारत की ही सभ्यता अरु संस्कृति गुणखान
इस ही से होता भला हो इसका सम्मान॥
भारत माता के तुम्ही सच्चे वीर सपूत
मान भंग होने न दो बनिये नहीं कपूत।

अहिंसा पत्र

(पाक्षिक)

इस पुस्तक
जयपुर द्वारा सं
सोलहवीं तारी

इस पत्र
अहिंसा,
परिपूर्ण
बनकर

यों
के प्रसा
हृदयों
बड़ा दे
कर स
१०० प्र

इस पुस्तक के लेखक द्वारा लिखी हुई पुस्तकें

धर्म सोपान	(पद्यों में)	चार
तत्वालोक	(पद्यों में)	,,
आत्मवैभव	(पद्यों में)	,,
महावीर देशना		,,
विवेक मंजूषा		समाप्त
साम्यवाद से मोर्चा		,,
जैन मन्दिर और हरिजन		समाप्त
जैन धर्म और जाति भेद		।।)
वर्ण विज्ञान		१)
क्या पशु पक्षियों की बलि उचित है ?		समाप्त
दिगम्बर जैन साधु की चर्या		दूसरा संस्करण छप रहा है
श्रेयोमार्ग		।) समाप्त
जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है		।) ,,
मन्दिर प्रवेश मीमांसा		।)
अहिंसा तत्व		।)
पशुवध सबसे बड़ा देशद्रोह		=)
भारतीय संस्कृति का मूल रूप		।=)

मुद्रक—सर्वोदय प्रेस, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार,
जयपुर ।